IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 3, December 2024
Impact Factor: 7.53

vu|lfpr tutkfr;k d fodkl e 0;kikfjd Ñf"k Qlyk dk v/;;u

¼e/;in'k d e.Myk ftys dh e.Myk rglhy d fo'k"k lUnHk e½

डॉ. हर्ष देव चौधरी
सहायक आचार्य (भूगोल विभाग)
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा,
सिरोही (राजस्थान)

पूजा ठाकरे
पी-एच.डी. (भूगोल)
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा,
सिरोही (राजस्थान)

डॉ. देवेंद्र मुझाल्दा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा

'kks/k lkj:
पुण्य सलिला नर्मदा नदी के किनारे अपने गौरवशाली अतीत के साथ स्थित, प्राचीन धार्मिक नगर माहिष्मती जो अब मण्डला के नाम से जाना जाता है। यह जबलपुर संभाग का प्राकृतिक संसाधनों वन तथा खनिज पदार्थो की दृष्टि से सबसे समृद्ध जिला है। इसकी एक गौरवशाली ऐतिहासिक सभ्यता और संस्कृति है। इसका परिचय कुछ इस प्रकार है मण्डला जिले की ऐतिहासिक आदिवासी सभ्यता और संस्कृति महाकौशल का दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र जिसमें मण्डला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, शहडोल, सरगुजा कवर्धा तथा बिलासपुर जिले के भाग सम्मिलित है, जो आदिवासी बहुल क्षेत्र है। मण्डला इसका प्रमुख केन्द्र है। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों की सभ्यता तो आज केवल इतिहास के कुछ पन्नों में सीमित है, परन्तु उनके अवशेष आज भी नर्मदा घाटी की सभ्यता में समाहित इन जातियों में देखने को मिलता है। सर्वप्रथम स्व. श्री रामभरोस अग्रवाल ने इस जातियों के बीच में रहकर इनकी सभ्यता और संस्कृति का गहन अध्ययन कर सभी पुरानी मान्यताओं को निष्क्रिय करते हुए उनकी श्रेष्ठता प्रतिपादित की। रानी दुर्गावती का युग यहाँ का स्वर्णिम युग कहा जाता है। यहाँ के किसान सोने की मुद्राओं में राजकोष का कर चुकाया करते थे। समृद्धि यहाँ की चेरी थी। साहित्य तथा संस्कृति की जो उन्नति इस काल में हुई वह अवर्णनीय है।

'kCn dqath: –अनुसूचित जनजातियों के विकास में व्यापारिक कृषि फसलों का अध्ययन करना।

ifjp;:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मध्यप्रदेश के मण्डला जिले की मण्डला तहसील में व्यापारिक फसलों के उत्पादन से अनुसूचित जनजातियों के आर्थिक विकास एवं जीवन स्तर में सुधार है, साथ ही व्यापारिक फसलों के उत्पादन से प्रदेश एवं जिले की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि हुई है। शोधार्थी द्वारा यह शोध अनुसंधान किया जाने का प्रमुख कारण यह भी है, कि इस शोध अनुसंधान से सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन तथा भविष्य में इस विषय पर शोध किये जाने वाले शोध अनुसंधानकर्ताओं के लिए भी यह शोध महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। मण्डला जिले में व्यापारिक फसलों को बढ़ावा देने के लिए भी सहायक होगा। मण्डला

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 4, Issue 3, December 2024 Impact Factor: 7.53

जिले में अनुसुचित जनजातियों के आर्थिक उत्थान के लिये व्यापारिक फसलों के उत्पादन में नई पहचान के रूप में मण्डला जिला की मण्डला तहसील के विकास के लिये यह अनुसंधान महत्वपूर्ण है।

v/;;u dk egRo

प्रस्तुत शोध के अध्ययन का महत्व यह है, कि क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग एवं कृषि की उत्पादकता में सिंचाई सुविधाओं एवं आधुनिक कृषि पद्धति अपनाने से क्या परिवर्तन आया है, तथा विभिन्न फसलों के उत्पादन में कितने प्रतिशत वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि की उत्पादकता बढ़ाने के क्या करण है, क्षेत्र में कृषक कौन–कौनसी प्रमुख फसलों का उत्पादन वर्तमान में कर रहा है। मण्डला जिले की विभिन्न तहसीलों में कृषि की उत्पादकता में कितना अंतर है। कौन–कौनसी तहसीलों की कृषि उत्पादकता उत्तम है, तथा कम है, मण्डला जिले में कृषि की उत्पादकता में पिछले वर्षो में तथा वर्तमान समयमें आधुनिक कृषि अपनाने के बाद कितना अन्तर आया इसका महत्व क्या हैं?

अध्ययन क्षेत्र मण्डला जिले में कृषि के अन्तर्गत बोई जाने वाली विभिन्न फसलों के प्रति हैक्टेयर उत्पादन में दशकीय वृद्धि हुई है, तथा इस वृद्धि का मुख्य कारण कृषकों द्वारा आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाना तथा नवीन प्रमाणित बीजों को लगाना जिससे अच्छा उत्पादन प्राप्त हो सके। प्रस्तुत शोध के माध्यम से अनुसंधानकर्ता तथा कोई कार्य योजना बनाने वाले इस शोध कार्य का अनुसरण करने से उसे इस क्षेत्र की कृषि उत्पादकता तथा प्रमुख फसलों के उत्पादन से संबंधित जानकारी प्राप्त हो जायेगी तथा वह इस क्षेत्र से संबंधित कार्य योजना आसानी से बना सकेगा।

मण्डला जिले में कृषि क्षेत्र में तथा कृषि उत्पादकता से संबंधित जानकारी प्राप्त करने वालों के लिये यह शोध कार्य महत्वपूर्ण होगा। शोध के माध्यम से मण्डला जिले की विभिन्न तहसीलों में कृषि उत्पादकता तथा फसल उत्पादन की स्थिति कर सकेंगे। साथ ही कृषक विभिन्न फसलों की उत्पादकता तथा नवीन कृषि तकनीकी की जानकारी भी इस शोध के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। इस शोध अध्ययन का महत्व और भी महत्वपूर्ण होगा।

v/;;u ds mÌ'; :–

1. व्यापारिक फसलों द्वारा कृषकों के विकास पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करना।
2. कृषकों की सामाजिक–आर्थिक विकास में आधुनिक कृषि यन्त्रीकरण के प्रभावों का आंकलन करना।
3. मण्डला जिले में व्यापारिक फसलों के उत्पादन में हुई वृद्धि के कारणों का पता लगाना।

v/;;u dh ifjdYiuk,¡&

1. आधुनिक कृषि भूमि में व्यापारिक फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई है, हाँ तो कितनी वृद्धि हुई और क्या परिवर्तन देखने में आया आदि का आंकलन करना।
2. कृषकों के सामाजिक–आर्थिक जीवन में व्यापारिक फसलों के महत्व को जानना तथा यह प्राप्त करना की इन फसलों के उत्पादन से उनका जीवन स्तर ऊँचा उठा है या नहीं।
3. कुछ व्यापारिक फसलों का उत्पादन सिर्फ इन जिलो में ही होता है, इसका क्या कारण है, आदि तथ्यों का आंकलन करना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 4, Issue 3, December 2024 Impact Factor: 7.53

प्रस्तुत शोध अनुसंधान के शीर्षक ''अनुसूचित जनजातियों के विकास में व्यापारिक फसलों का भौगोलिक अध्ययन'' शोध का अनुसंधान में शामिल किया गया है। शोध प्रश्न चुनना मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान दोनों का एक अनिवार्य तत्व है। शोध अनुसंधान की जाँच के लिए डेटा संग्रहण और विश्लेषण की आवश्यकता होती है। शोध प्रश्न शोध अनुसंधान के महत्वपूर्ण विषय पर ज्ञान के कुछ सुधार करना चाहते है, और मिश्रित विधियों को शामिल किया गया है।

प्रस्तुत शोध अनुसंधान निम्न है–

- व्यापारिक फसलों के उत्पादन का अनुसूचित जनजातियों के विकास पर प्रभावों का अध्ययन करना।
- मण्डला जिले की प्रमुख व्यापारिक फसलों के उत्पादन क्षेत्र
- व्यापारिक फसलों के उत्पादन से कृषकों के जीवनस्तर में एवं आर्थिक विकास में सुधार
- व्यापारिक फसलों का उत्पादन करने वाले अनुसूचित जनजाति के कृषकों आंकलन
- व्यापारिक फसलों के विक्रय केन्द्रों एवं बाजार व्यवस्था
- मण्डला जिले में व्यापारिक फसलों के लिए प्रमुख विपणन केन्द्र

lkfgR; lehkk

सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में शोध से संबंधित साहित्य का पुनर्रावलोकन एक महत्वपूर्ण चरण हैं। क्योंकि किसी भी शोध को प्रारंभ करने से पहले यह आवश्यक है, उस विषय पर पूर्व किये गये अध्ययनों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाये जिससे की वर्तमान शोध कार्य को सही दिशा प्रदान करने में सहायता मिल सके। अधिकांशतः जब अनुसंधानकर्त्ता इसके महत्व को समझ नही पाता है अपनी समस्या से संबंधित कुछ अनुसंधान लेखो ओर पुस्तको का अध्ययन कर इसकी इतिश्री समझ लेते हैं। वस्तुतः साहित्य का अध्ययन एक कठोर परिश्रम का कार्य है। अतः कहा जा सकता है कि संबंधित साहित्य के बिना कोई भी अनुसंधान उच्च स्तरीय नही हो सकता है। साहित्य के अध्ययन से अनुसंधान की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि भी तैया होती है, तथा विभिनन सिद्धान्तों एवं निहित धारणाओं को स्पष्ट करता है। अनुसंधान में लिए गये क्षेत्र में जिस प्रकार का कार्य जुड़ा हो इसकी जानकारी देता हैं। साथ विधि उपकरणों आदि को निश्चित करने में सहायक होता हैं। व्यापारिक कृषि के उत्पादन पर भी अनेक विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों ने अपने–अपने लेखों में इसके उत्पादन संबंधी अनेक विधियाँ एवं उपाय बताये है, तथा अपने लेखों में इसका जिक्र किया हैं।

fu"d"kZ

व्यापारिक फसलों का कृषको के जीवन स्तर पर प्रभाव। शीर्षक पर किये गये शोध–पत्र में व्यापारिक फसलों के उत्पादन का कृषको के जीवन स्तर पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा है, जिसको निम्नांकित निष्कर्षो के माध्यम से स्पष्ट किया गया है–

1) व्यापारिक फसलों के उत्पादन का अध्ययन क्षेत्र मण्डला जिलों में कृषको पर प्रभाव पड़ा है।
2) कृषको के जीवन स्तर के साथ–साथ उनकी प्रतिव्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है।
3) अध्ययन क्षेत्र में पिछले दो सालों में व्यापारिक फसलों क्षेत्रफल बढ़ा है। पहले इन फसलों को कृषक कम लेते थे, लेंकिन वर्तमान में तेजी से ले रहे है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 3, December 2024
Impact Factor: 7.53

I>ko %&

- व्यापारिक फसलों के उत्पादन में आधुनिक कृषि का और वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जा रहा है, लेंकिन कृषक अधिकांश निरक्षर, उन्हें साक्षर करने की आवश्यकता है।
- क्षेत्र में व्यापारिक फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिये अधिक से अधिक कृषकों को इन फसलों के लाभों के बारे में प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।
- इन फसलों के निर्यात के लिये क्षेत्र में बाजार उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, ताकि कृषक अपनी उपज क्षेत्र में ही विक्रय कर सकें।
- अधिक उपज देने वाली फसलों को बोया जाने ताकि अधिक से अधिक उत्पादन एवं लाभ प्राप्त हो सके।
- उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का उपयोग किया जाये ताकि कम श्रम में अधिक उपज हो सके।

I UnHk' Iph %&

1. डॉ. जाट द्विरधीचन्द्र % जल ग्रहण प्रबंधन 2000 प्वाइंटर फसली सर्च, जयपुर (राजस्थान)
2. Bhatia S.S. (1967) : A new measure of agriculture efficiency in U.P. Indian Economic Geography, p.p. 43
3. मूखर्जी आर.एस. (1962) % अनुसंधान विधियाँ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पेज 09–12
4. बंसल पी.सी. (1974) % Agriculture problem of India 29 Fp New Delhi A mold Heinemann, p.p. 3-90
5. Chouhan (1996) : Study of Agriculture land, Shivlal Agrawal Company Agra P.p.-18